19/05/2020

Educational Psychology

Paper III

B.A. II (Hons.)

Explain the Characteristics of Problem Children. Discuss the Important Measures of Educating Them.

समस्या बालकों की विशेषताओं का वर्णन करें तथा इन्हें शिक्षित करने के महत्वपूर्ण उपायों की विवेचना करें।

कक्षा में कुछ बालक ऐसे होते हैं जो बात-बात में साथियों और शिक्षकों से बुरी तरह उलझ जाते हैं, कक्षा से बहार रहना अपनी इज़्ज़त समझते हैं, स्कूल के अनुशासन को तोड़ने में आगे रहते हैं तथा स्कूल के प्रिंसिपल एवं दूसरे शिक्षकों को धमकी देते रहते हैं। साधारणतः हम ऐसे ही बालकों को समस्या बालक (problem child) कहते हैं। स्पष्तः ऐसे बालकों का behaviour and adjustment सामान्य बालकों के व्यवहार एवं समायोजन से काफी भिन्न होता हैं। दूसरे शब्दों में, इनके व्यवहार एवं समायोजनशीलता में अधिक abnormality होती हैं। समस्या बालक को कई मोवैज्ञनिकों ने परिभाषित किया हैं, जिसमें **Bower, 1969** तथा **Kauffman, 1977** द्वारा समस्या बालक की दी गयी परिभाषा सबसे अधिक मान्य एवं प्रचलित हैं।

Bower के अनुसार- **यदि निम्नांकित पांच गुणों में एक या एक से अधिक गुण किसी स्कूली बालक द्वारा लम्बे समय से दिखाया जा रहा हो तो उसे एक समस्या बालक के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं।**

1) **यदि बालक में सीखने की ऐसी अक्षमता हो जिसकी बौद्धित आधार पर व्याख्या नहीं की जा सकती।**
2) **यदि बालक में अपने साथियों एवं शिक्षकों के साथ संतोषजनक अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध बनाने एवं कायम रखने की अक्षमता हो।**
3) **यदि बालक में सामान्य परिस्थितियों (normal conditions) में भी अनुपयुक्त भाव (inappropriate feeling) उत्पन्न होता हो या उसके द्वारा अनुपयुक्त व्यवहार किया जाता हैं।**
4) **यदि बालक में सामान्यतः दुःख या उदासी की प्रधानता रहती हो, तथा**
5) **यदि बालक में व्यक्तिगत या स्कूल की समस्याओं के शारीरिक लक्षणों (physical symptoms), दर्द तथा विभिन्न तरह के डर के रूप में समाधान करने की प्रवृत्ति अधिक हैं।**

Kauffman ने भी समस्या बालक को परिभाषित करते हुए कहा है कि-

"समस्या बालक उन बालकों को कहा जाता है जो अपने वातावरण के प्रति सामाजिक रूप से अस्वीकार ढंग से या/और व्यक्तिगत रूप से असंतोषजनक तरीके से स्पष्ट ढंग से लम्बे अरसे से अनुक्रिया करते हैं, परन्तु जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य तथा व्यक्तिगत रूप से संतुष्टि देने वाले व्यवहार को सिखाया जा सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समस्या बालकों में कुछ ऐसे व्यवहारों की प्रधानता होती है जिनमें असामान्यता की प्रधानता होती है। ऐसे बालकों में एक विशेषता ये भी होती है कि उपयुक्त वातावरण एवं शिक्षा प्रदान कर के उन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहारों एवं वैसे व्यवहारों को जो व्यक्तिगत संतुष्टि (personal satisfaction) प्रदान कर सकते हैं सिखाया जा सकता है।

Education of a Problem Child

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने समस्या व्यवहार के विभिन्न कारणों के अलोक में ऐसे बालकों की उपयुक्त शिक्षा एवं समुचित उपचार के लिए निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किया है-

1) **घरेलु वातावरण में सुधर (Improvement in home environment)-**

किसी भी बालक को एक समस्या बालक बनने में उसके घरेलु वातावरण की अनुपयुक्त (inadequacy) की अहमियत काफी होती है। **Hurlock, 1979** के अनुसार अगर माता-पिता का आपसी सम्बन्ध ठीक हो, उन दोनों द्वारा बालकों को उचित स्नेह एवं प्यार मिले, घरेलु वातावरण अनुकूल रहने से बालकों में मानसिक शांति बानी रहती है और ऐसी स्थिति में उनको किसी भी प्रकार की दी गयी शिक्षा काफी लाभदायक होती है तथा शैक्षिक समायोजन (educational adjustment) की शक्ति की भी वृद्धि होती है।

2) **अच्छी अध्यापन विधियाँ (Good teaching methods)** –

शिक्षक को चाहिए की समस्या बालकों के बुद्धि स्तर को ध्यान में रखते हुए एक अच्छी अध्यापन विधि अपनाएं। एक अच्छी अध्यापन विधि से तात्पर्य ऐसी विधि से होता है जिसमें शिक्षक विषय-वस्तु या पाठ की ओर छात्रों की उचित अभिरुचि एवं प्रेरणा बानी रहती है। अत्यंत छोटे समस्या बालकों के लिए kindergarten तथा montesseri शिक्षा पद्यति एक उत्तम शिक्षा पद्धति का उदाहरण है तथा कुछ बड़े समस्या बालकों की शिक्षा के लिए प्रदर्शन विधि (demonstration method) न की भाषण विधि (lecture method) को उपयुक्त (appropriate) माना गया है।

3) **स्कूल का स्वस्थ एवं अच्छा अनुशासन (Healthy and good discipline in school)** –

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का मत है कि स्कूल का अनुशासन न अधिक कठोर एवं सख्त होना चाहिए और न ही अधिक ढीका-ढला बल्कि इसे ऐसा होना चाहिए जिसमें छात्र अपनी इच्छाओं एवं कठिनाइयों की अभिव्यक्ति शिक्षक से खुल कर कर सकें। दूसरी तरफ शिक्षकों को भी चाहिए की वे जातीयता, पक्षपात, तरफदारी आदि जैसी बुराइयों से बचें क्यूंकि इन गुणों से स्कूल में अनुशासनहीनता बढ़ेगी और समस्या बालकों को समुचित शिक्षा देना संभव नहीं हो पायेगा।

4) **<u>बौद्धिक क्षमता के अनुकूल शिक्षा (Education according to intellectual ability)</u>**-

समस्या बालक में बुद्धि स्तर के खयाल से कुछ विचलन (deviation) पाया जाता है। ऐसे बालक प्रायः या तो अधिक तीव्र बुद्धि के होते हैं या अधिक मंद बुद्धि के होते हैं। Reilly, 1977 के अध्ययन के अनुसार जब समस्या बालकों को शिक्षा उनके बौद्धिक स्तर के अनुकूल पाठ्यक्रम तैयार कर के दी जाती है तब इससे शिक्षा में उनकी अभिरुचि एवं रुझान बढ़ती है तथा इनमें समस्यात्मक व्यवहार की बारंबारता में धीरे-धीरे कमी आने लगती है।

5) **<u>अभिरुचि एवं अभिक्षमता के अनुसार शिक्षा (Education according to interest and aptitude) –</u>**

समस्या बालकों की मुख्य अभिरुचि तथा अभिक्षमता का पाता लगा कर यदि उसके अनुकूल शिक्षा दी जाती है, तो उन्हें ऐसी शिक्षा का भरपूर फ़ायदा होता है और उनकी शैक्षिक अभिरुचि (educational interest) तथा शैक्षिक अभियोजन (educational adjustment) अधिक तीव्र हो जाती है। शिक्षकों को समस्या बालक की अभिरुचि एवं अभिक्षमता के अनुकूल शिक्षा देने के खयाल से स्कूल सलाहकार (school councellor) से आवश्यक सलाह मशवरा करना चाहिए।

6) **<u>मनोरंजन की सुविधा (Recreation facilities)</u>** –

यथासंभव स्कूल में मनोरंजन के पर्याप्त साधन होने चाहिए। यदि स्कूल में उनके लिए उनकी अभिरुचि के अनुसार खेल, नाटक, संगीत, चलचित्र, आदि की व्यवस्था समय-समय की जाती है, तो ऐसे बालकों का रुझान पाठ्यक्रम की ओर बना रहता है और उन्हें शिक्षा से समुचित लाभ मिलता रहता है।

7) **<u>व्यवहार परिमार्जन (Behaviour modification)</u>** –

समस्या बालकों के उपचार तथा शिक्षा देने की दिशा में आज-कल व्यवहार परिमार्जन प्रविधियाँ काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। इन प्रविधियों के सहारे समस्या बालकों में समस्यात्मक व्यवहार धीरे-धीरे काम होते जाते हैं और उसकी जगह नए-नए सामाजिक व्यवहार बालक सीखते जाते हैं। इसका एक फ़ायदा यह भी होता है कि ऐसे बालक तब समुचित शिक्षा आसानी से ग्रहण कर पाते है।

अतः निष्कर्षतः समस्या बालकों की शिक्षा एवं उपचार की दिशा में मनोवैज्ञानिकों द्वारा उचित कार्रवाई की गयी है तथा अनेक महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए हैं। फिर भी इस विषय पर अभी और शोध की आवश्यकता है।

(... to be continued)

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com